By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. History (H)
Deg - II
Paper - III
Date; - 28.05.2020

बलबन की जीवनी तथा उपलब्धियाँ :-

(form of estimate of Balban as a ruler and man

गयासुद्दीन बलबन इलबरी वंश का तुर्क था। उसका पिता 10 हजार परिवारों का खान था परन्तु दुर्भाग्यवश युवाकाल में ही गयासुद्दीन को मंगोलों द्वारा उठा लिया गया एवं बगदाद में गुलाम के रूप में बेच दिया गया। इल्तुतमिश ने उसे खरीद लिया और उसे भिश्तियों में नौकर रख लिया गया। बाद में उसके गुणों से प्रभावित हो इल्तुतमिश ने उसे अपना खासदार बना लिया। अपने अपूर्व चातुर्य एवं गुणों से वह चालीस अमीरों के दल का एक सदस्य हो गया। रजिया ने उसे अमीरो-ए-शिकार बनाया। बहराम के समय में वह "अमीर-ए-आखुर और मसूदशाह के शासनकाल में अमीर-ए-हाजिब बना। नासिरूद्दीन ने उसे "उलुग खाँ" और बाद में नायब-ए-मुमालिकात" के पद पर आसीन किया और वह 20 वर्ष तक इस महत्वपूर्ण पद पर कार्य करता रहा। 1277 ई० में नासिरूद्दीन की मृत्यु के उपरांत वह स्वयं सुल्तान के पद पर आसीन हुआ।

बलबन की प्रारम्भिक समस्याएँ :→ जब गयासुद्दीन बलबन राजसिंहासन पर आसीन हुआ, उस समय साम्राज्य की दशा शोचनीय थी। Lanepoole के शब्दों में महत्वाकांक्षी से पूर्ण तुर्की खानों का सदा उसके पीछे लगा रहना, हिन्दुओं का उचित अवसर मिलते ही विद्रोह के लिए उद्यत होना, मेवातियों का दिल्ली में प्रवेश करना और भिश्तियों तथा सुकुमार कन्याओं को उठा ले जाना आदि उसके समक्ष प्रमुख समस्या थी

इस प्रकार साम्राज्य में सर्वत्र अराजकता व्याप्त थी। बर्नी के अनुसार लोगों के दिल से राज्य का भय निकल गया था और देश दुर्दशा का शिकार हो गया था। परन्तु बलबन बड़ा ही वीर एवं साहसी शासक था। उसने इन सभी समस्याओं का कुशलतापूर्वक दमन करना प्रारम्भ किया।

उसने सर्वप्रथम मेवातियों के विद्रोह-दमन की ओर ध्यान दिया। वह पूरे एक वर्ष तक मेवातियों के विनाश और दिल्ली के निकटवर्ती जंगलों को कटवाने में व्यस्त रहा और कहा जाता है कि 12 वर्ष से अधिक उम्र वाले मेवाती पुरुष कटवा डाले गये।

साथ ही उसने अनेक सैनिक छावनियों भी स्थापित की। उसने दोआब के कम्पिल, भोजपुर एवं पटियाली के डाकुओं को बड़ी निर्दयता से विनाश किया और इस प्रकार दमनकारी नीति अपनाकर उसने दोआब की प्रजा को आज्ञाकारी बना दिया।

इन विद्रोहों के दमन के बाद उसने मंगोलों के आक्रमण पर भी ध्यान दिया। दिल्ली के सुल्तानों में सर्वप्रथम वही था जिसका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने भी इस दिशा में उसकी नीति का अनुकरण किया। उसने लाहौर पर अधिकार किया। पुराने दुर्गों की मरम्मत करवायी। नये दुर्गों का निर्माण कराया और वहाँ अपने अनुभवी सरदारों और सैनिकों को नियुक्त की। उन समस्त प्रदेशों को उसने अपने चचेरे भाई शेर खाँ को सुपुर्द कर दिया। जब शेर खाँ की मृत्यु हो गयी तो उसने अपने दो पुत्रों को यहाँ नियुक्त किया - अपने ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद को मुलतान में और बुगरा खाँ को समाना में। मोहम्मद की मृत्यु के बाद उसने गाजी मलिक को इस प्रदेश का सूबेदार नियुक्त किया

वह विद्रोहियों को हाथी के पैरो के नीचे कुचलवा डालता था, टुकड़े- टुकड़े करवा देता था, उनकी जीवित खाल खिंचवा देता था। और उनके रक्त की नदियाँ बहा डालता था।

उल्माओं के प्रति बलबन की नीति :→ बलबन के समय में उल्माओं का स्तर बहुत गिर गया था। उनमें धार्मिकता एवं ईमानदारी का अभाव था और वे राजनीतिक गतिविधियों में विशेष भाग लेने लगे थे। बलबन ने उल्माओं को राजनीति से पूर्णतः अलग कर दिया। उनके राजनीतिक अधिकारों का हनन कर डाला एवं मात्र धार्मिक सलाहों में ही उन्हें प्राथमिकता दी।

चालीस अमीरों के दल का दमन :→ इल्तुतमिश ने अपनी सहायता और वंश की रक्षा के लिए 40 गुलामों का दल बनाया था। बलबन भी स्वयं इस गिरोह का सदस्य था। उसने अनुभव किया कि शासन के उथल-पुथल में इस दल के सदस्यों का प्रमुख हाथ रहा है तथा सुल्तान पद की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाने का उत्तरदायी भी उनका ही था। अतः उसने उनके दमन करने के लिए कुछ उपायों को लागू किया। न्यूनतम अपराधों के लिए भी अमीरों को गम्भीर दण्ड दिया जाने लगा। अमीन खाँ को तुगरिल से पराजित होकर आने पर उसने उसे मार कर फाटक पर लटकवा दिया था।

The End